झलकियां

11 हिन्दुस्तान
नई दिल्ली • मंगलवार • 24 सितंबर 2013

'वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते' अर्थात् संस्कृत यानी संस्कारयुक्त वाणी ही मनुष्य की शोभा बढ़ाती है। -संस्कृत की एक सूक्ति

जीवन दर्शन

मुक्त नारी का सहज संगीत

सहजो बाई राजस्थान में 18वीं शताब्दी में पैदा हुए संत चरणदास की शिष्या थी। सहजो का विवाह हो चुका था और दूसरे दिन उसे ससुराल भेजने के लिए सखियां उसका साज-सिंगार कर रही थीं। उस समय चरणदास वहां आए और उन्होंने सहजो को देख कर कहा, 'सहजो तनिक सुहाग पर कहां गुथावै शीश!' सहजो जैसे जाग गई, उन्हें होश आया और वह चरणदास के साथ भक्ति की राह पर चल पड़ीं। आगे जाकर वह स्वयं आत्मज्ञानी महिला संत हुईं। प्रस्तुत है सहजो के वचनों पर ओशो द्वारा दिए गए प्रवचनों का अंश।

पुरुष बड़ी अलग तरंग है, स्त्री बड़ी अलग तरंग है। अलग ही नहीं, मैं कहता हूं कि बड़ी विपरीत, एक-दूसरे के प्रतिकूल जाती हुई तरंगें हैं और इसीलिए तो स्त्री-पुरुष के बीच इतना आकर्षण है। एक-दूसरे से भिन्न हैं, इसलिए एक-दूसरे को जानने, उघाड़ने की, एक-दूसरे के रहस्य को पहचानने की तीव्र आकांक्षा है।

मैं कैकड़ों मुक्तपुरुषों पर बोला, वह बात इकसुरी थी। आज दूसरे स्वर को जोड़ता हूं। इस दूसरे स्वर को समझने के लिए, उस पहले स्वर ने तुम्हें तैयार किया है, क्योंकि एक बड़ी अनूठी घटना घटती है। पुरुष भी जब मुक्ति के आखिरी सोपान पर पहुंचता है तो स्त्री जैसा हो जाता है, स्त्रीवत हो जाता है। यही तो फरीद ने कहा कि 'आशिक माशूक हो गया।' वह जो प्रेमी था, अब प्रेयसी हो गया। फरीद अपने से ही कहता है कि बहन, अगर तू ऐसा करे कि उस एक सच्चे की ही आस तुझमें रह जाए तो प्यास बहुत दूर नहीं है।

अगर तुम बुद्ध के जीवन को समझो तो तुम बुद्ध के जीवन में वैसी स्त्रैणता पाओगे जैसी श्रेष्ठतम स्त्री में कभी-कभी उपलब्ध होती है। वही सुकोमल भाव पाओगे। कहो उसे करुणा, लेकिन अगर गहरे में झांक कर देखोगे तो पाओगे, वह करुणा

ओशो

बुद्ध के भीतर जनम रही नई स्त्री का अनुसंग है, छाया है। महावीर में तुम उसे अहिंसा की तरह पाओगे। लेकिन जब भी कोई पुरुष मुक्त होगा तो अचानक तुम पाओगे उसके जीवन में बड़ा स्त्रैण माधुर्य आ गया। वे सभी गुण, जिनकी फरीद ने चर्चा की- धीरज, शील- वे सभी गुण स्त्रैण हैं।

पुरुष में धैर्य नहीं है। पुरुष बड़ा अधीर है, सदा जल्दी में है। अगर पुरुष को बच्चे पालने पड़ें तो संसार में बच्चे नहीं बचेंगे, उसमें उतना धैर्य नहीं है। अगर पुरुष को गर्भ सम्भालना पड़े तो गर्भपात ही गर्भपात हो जाएंगे संसार में। कोई पुरुष गर्भ सम्भालने को राजी न होगा। नौ महीने की प्रतीक्षा किसे हो सकती है? पुरुष जल्दी में है, तेजी में है। समय का उसे बड़ा बोध है।

स्त्री अनंत में जीती है, पुरुष समय में जीता है।

धैर्य स्त्री के लिए सुगम है, पुरुष के लिए साधना है। इसलिए फरीद कहते हैं, 'धैर्य साधो।' स्त्री-मन को लगेगा, इसमें साधने जैसा क्या है? धैर्य तो है ही।

पुरुष के लिए संघर्ष स्वाभाविक है, युद्ध स्वाभाविक है।

पुरुष जीतने का एक ही रास्ता जानता है- संघर्ष।

स्त्री जीतने का एक दूसरा रास्ता जानती है- समर्पण।

पुरुष जीत कर भी हार जाता है, स्त्री हार कर भी जीत जाती है। ऐसा उनका भेद है, और सुंदर है। विपरीत भी जाते हैं, फिर भी उनमें एक गहरा तालमेल है, क्योंकि पुरुष जीत कर हारता है, स्त्री हार कर जीतती है, इसलिए दोनों में तालमेल भी हो जाता है। विरोध मिल जाते हैं, दोनों एक-दूसरे के साथ बैठ जाते हैं। पुरुष भी जब मुक्ति के करीब पहुंचता है तो उसमें स्त्रैण फूल खिलते हैं। और स्त्री जब मुक्ति के करीब पहुंचती है तब उसमें पुरुष जैसे फूल खिलते हैं। इसे तुम थोड़ा समझ लो।

जैनों के चौबीस तीर्थंकरों में एक स्त्री है। उसका नाम है मल्लीबाई। लेकिन दिगंबर जैनों ने उनके नाम को मल्लीनाथ करदिया है, क्योंकि वे यह स्वीकार नहीं कर पाते कि कोई स्त्री मुक्त हो सकती है। स्त्री-पर्याय से मुक्ति है ही नहीं। तो वे मानते ही नहीं कि मल्लीबाई मल्लीबाई थी, वे तो कहते हैं, मल्लीनाथ। उनकी बात में भी थोड़ा अर्थ है। अर्थ यही है कि जब कोई स्त्री मुक्ति के करीब पहुंचेगी तो उसमें पुरुष जैसे फूल खिलेंगे। और जब कोई पुरुष मुक्ति के करीब पहुंचेगा, तो उसमें स्त्री जैसे फूल खिलेंगे। ऐसा क्यों होता है? इसे जानने के लिए थोड़ा मनुष्य के मन में प्रवेश करना पड़ेगा। प्रत्येक के भीतर दोनों हैं। पुरुष के भीतर स्त्री छिपी है, स्त्री के भीतर पुरुष छिपा है। ऐसा होगा ही, क्योंकि प्रत्येक दोनों से पैदा होता है। तुममें तुम्हारी मां ने भी आधा दान दिया है, तुम्हारे पिता ने भी आधा दान दिया है। तुम स्त्री नहीं हो सकते अकेले, तुम अकेले पुरुष भी नहीं हो सकते। स्त्री और पुरुष के संगम हो तुम। वहां दोनों आकर मिल गए हैं, उससे तुम्हारा निर्माण हुआ है तो तुममें आधी स्त्री होगी, आधा पुरुष होगा।

('बिन घन परत फुहार' पुस्तक से साभार। सौजन्यः ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन)

OSHO®
© 2013 ओशो इंटरनेशनल
कॉपीराइट & ट्रेडमार्क जानकारी